स्व–विकास और कलारसास्वाद

कक्षा ९

शासन निर्णय क्रमांक: अभ्यास - २११६/(प्र.क्र.४३/१६) एसडी- ४ दिनांक २५.४.२०१६ के अनुसार समन्वय समिती का गठन किया गया। ३.३.२०१७ को हुई इस समिति की बैठक में यह पाठ्यपुस्तक निर्धारित करने हेतु मान्यता प्रदान की गई।

स्व-विकास और कलारसास्वाद

नौवीं कक्षा

महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे ४.

65NS7G

आपके स्मार्टफोन में 'DIKSHA App' द्‌वारा, पुस्तक के प्रथम पृष्ठ पर Q.R. Code के माध्यम से डिजिटल पाठ्यपुस्तक एवं प्रत्येक पाठ में अंतर्निहित Q.R. Code में अध्ययन अध्यापन के लिए पाठ से संबंधित उपयुक्त दृक-श्राव्य सामग्री उपलब्ध कराई जाएगी।

प्रथमावृत्ति : २०१७
पुनर्मुद्रण : २०१९

© महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे – ४११००४.

इस पुस्तक का सर्वाधिकार राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यास मंडळ के अधीन सुरक्षित है। इस पुस्तक का कोई भी भाग महाराष्ट्र राज्य पाठ्पुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ के संचालक की लिखित अनुमति के बिना प्रकाशित नहीं किया जा सकता।

मुख्य समन्वयक
श्रीमती प्राची रविंद्र साठे

स्व–विकास और कलारसास्वाद विषय समिति
डॉ. शिरिषा साठे, अध्यक्ष
श्रीमती शीतल बापट, सदस्य
श्री विद्यानिधी(प्रसाद) वनारसे, सदस्य
श्रीमती आभा भागवत, सदस्य
श्रीमती प्रतिभा कदम, सदस्य
डॉ. अजयकुमार लोळगे, सदस्य–सचिव

निमंत्रित
श्रीमती सायली तामणे
श्री मनिष पिंगळे
श्रीमती परिणिता बालसुब्रमण्य
श्रीमती केतकी शहा
डॉ मधुवंती साठे
श्रीमती मंजिरी टकले
श्रीमती नीता मुतालीक
श्रीमती कल्पना संचेती
श्री इम्तियाज शेख
श्रीमती मनिषा अष्टपुत्रे
श्रीमती सुमेधा लेले
श्रीमती निशिगंधा शेजूळ
श्रीमती शामलाताई वनारसे

भाषांतर संयोजक : डॉ अलका पोतदार
विशेषाधिकारी हिंदी
संयोजन सहायक : सौ संध्या वि उपासनी
विषय सहायक हिंदी
भाषांतरकार : सौ. वृंदा कुलकर्णी
डॉ. माया जाधव
समीक्षण : डॉ. शुभदा मोघे
श्रीमती मंजुला त्रिपाठी मिश्रा
विषयतज्ञ : श्री रामहित यादव
प्रा. मैनोद्दीन मुल्ला

संयोजक : डॉ. अजयकुमार लोळगे
विशेषाधिकारी कार्यानुभव व
प्र.विशेषाधिकारी कला,
पाठ्यपुस्तक मंडळ, पुणे.
अक्षरांकन : विद्याविभाग, पुणे
निर्मिति : श्री सच्चितानंद आफळे
मुख्य निर्मिति अधिकारी
श्री सचिन मेहता
निर्मिति अधिकारी
श्री नितीन वाणी
सहायक निर्मिति अधिकारी
कागज : ७० जी.एस.एम, क्रिमवोव्ह
मुद्रणादेश : N/PB/2019-20/25,000
मुद्रक : M/S. HITECH GRAPHICS, RAIGAD

मुखपृष्ठ एवं सजावट
श्रीमती फाल्गुनी गोखले
श्रीमती मधुरा पेंडसे

प्रकाशक
श्री विवेक गोसावी
नियंत्रक,
पाठ्यपुस्तक निर्मिती मंडळ,
प्रभादेवी, मुंबई – २५

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक **संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य** बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय,**

विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म

और उपासना की **स्वतंत्रता,**

प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**

प्राप्त कराने के लिए,

तथा उन सब में

व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता

और अखंडता सुनिश्चित करने वाली **बंधुता**

बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. (मिति मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी, संवत् दो हजार छह विक्रमी) **को एतद् द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं ।**

राष्ट्रगीत

जनगणमन – अधिनायक जय हे
भारत – भाग्यविधाता ।
पंजाब, सिंधु, गुजरात, मराठा,
द्राविड, उत्कल, बंग,
विंध्य, हिमाचल, यमुना, गंगा,
उच्छल जलधितरंग,
तव शुभ नामे जागे, तव शुभ आशिस मागे,
गाहे तव जयगाथा,
जनगण मंगलदायक जय हे,
भारत – भाग्यविधाता ।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय, जय हे ।।

प्रतिज्ञा

भारत मेरा देश है । सभी भारतीय मेरे भाई–बहन हैं ।

मुझे अपने देश से प्यार है । अपने देश की समृद्ध तथा विविधताओं से विभूषित परंपराओं पर मुझे गर्व है ।

मैं हमेशा प्रयत्न करूँगा/करूँगी कि उन परंपराओं का सफल अनुयायी बनने की क्षमता मुझे प्राप्त हो ।

मैं अपने माता–पिता, गुरुजनों और बड़ों का सम्मान करूँगा/करूँगी और हर एक से सौजन्यपूर्ण व्यवहार करूँगा/करूँगी ।

मैं प्रतिज्ञा करता/करती हूँ कि मैं अपने देश और अपने देशवासियों के प्रति निष्ठा रखूँगा/रखूँगी । उनकी भलाई और समृद्धि में ही मेरा सुख निहित है ।

प्रस्तावना

प्रिय विद्‌यार्थियो,

कक्षा नौंवी में आप सबका स्वागत है। ‘स्व-विकास कलारसास्वाद’ विषय की पाठ्‌यपुस्तक आपके हाथ में देते हुए हमें बड़ी प्रसन्नता हो रही है।

इस विषय से वैश्वीकरण की २१ वीं सदी में आवश्यक जीवनकौशल आत्मसात करने के लिए और आपके कैरिअर की सफल यात्रा के लिए आवश्यक मार्गदर्शन प्राप्त करेंगे। भावी जीवन में क्षमता के साथ चुनौतियों का सामना कर सकेंगे। ऐसा विश्वास है कि स्व को पहचान कर विकास के अवसर ढूँढ़ने की आप में क्षमता विकसित होगी।

आप जानते ही हैं कि मानव जीवन में कला का महत्त्व असाधारण है। कला आपके जीवन को समृद्‌ध बनाने में सहायक होगी। इसी कारण कला रसास्वादन भी काफी महत्त्वपूर्ण हो जाता है।

‘स्व-विकास और कलारसास्वाद’ पाठ्‌यपुस्तक का मुख्य उद्‌देश्य आपके दैनिक जीवन से संबंधित है। पुस्तक का प्रारंभ आपकी रुचि के अनुसार चित्रकथा से किया गया है। चित्र द्‌वारा अगले प्रकरण में क्या सीखने वाले हैं, यह संदेश दिया है। इस पाठ्‌यपुस्तक के माध्यम से मजेदार कृतियों से आप यह विषय सीखने वाले हैं। आपको इन सभी कृतियों को करना आवश्यक है। ये सारे उपक्रम अनेक विचार प्रक्रिया को गति देंगे।

पाठ्‌यपुस्तक में अनेक छोटे-छोटे खेलों का समावेश किया गया है। उन खेलों से आप बहुत कुछ सीखेंगे। दिए गए प्रकल्प, उनकी कार्यपद्‌धति तथा इन्हें करते समय आवश्यक कृति आपको स्वयं ध्यान से करना आवश्यक है। आवश्यकतानुसार अपने शिक्षकों, अभिभावकों तथा अपने सहपाठियों की सहायता लें। आज के गतिमान प्रौद्‌योगिक युग में संगणक तथा स्मार्ट फोन से आप परिचित ही हैं । पाठ्‌यपुस्तक से अध्ययन करते समय सूचना प्रसारण के इन साधनों का सही प्रयोग करें। इससे आपका अध्ययन आसान होगा।

पाठ्‌यपुस्तक का अध्ययन करते समय आपकी रुचि एवं आने वाली समस्याएँ तथा प्रश्न हमें अवश्य भेजें।

आपको अपने शैक्षिक विकास के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

(डॉ. सुनिल मगर)
संचालक
महाराष्ट्र राज्य पाठ्‌यपुस्तक
निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे

पुणे
दिनांक : २८ अप्रैल २०१७, अक्षय तृतीया
भारतीय सौर : ८ वैशाख १९३९

स्व–विकास तथा कलारसास्वाद के क्षमता विधान

नौवीं कक्षा के अंत में विद्‌यार्थियों में निम्नांकित क्षमताएँ विकसित होने की अपेक्षा की जाती है।

अ.क्र	घटक	क्षमता
१.	स्व पहचान	१. **'स्व' का एहसास/स्वयं बोधन** – स्वयं के बारे में एक सुसंगत चित्र मन में विकसित होना। २. **स्वयं व्यवस्थापन** – स्वयं के व्यक्तिगत, सामाजिक और आर्थिक बलस्थान और मर्यादाओं को पहचानना तथा उनका विश्लेषण करने की क्षमता प्राप्त करना। ३. **विविधताओं को स्वीकारना** – आसपास के लोगों में पाई जाने वाली विविधताओं का स्वीकार करने, तथा उनके महत्त्व जानकर उनके समर्थन की क्षमता प्रतिपादित करना।
२.	बढ़ती आयु	१. **स्व एहसास/स्वयं बोधन** – किशोर आयु के बदलाव तथा उस बारे में निर्माण होने वाले संभावित खतरों के बारे में होने वाली समझ प्रतिपादित करना। २. **भावनाओं का सही तरीके से समायोजन** – किशोरावस्था में होने वाले भावनात्मक बदलावों के साथ उचित सामंजस्य स्थापित करने की क्षमता प्रतिपादित करना। ३. **विश्लेषणात्मक विचार** – दैनिक जीवन की घटनाएँ तथा परिस्थितियों का विश्लेषण करके सही पर्याय का चुनाव करने की क्षमता प्रतिपादित करना। ४. **आत्मविश्वास** – खतरा तथा गैरजिम्मेदारी का बर्ताव टालने के लिए सही पर्याय चुनने का आत्मविश्वास जगाना।
३.	मूल्य	१. **स्व का एहसास/स्वयं बोधन** – स्वयं के व्यक्तिगत मूल्यों के बारे में तथा मूल्याधिष्ठित जीवन के महत्त्व की समझ प्रतिपादित करना। २. **स्व–व्यवस्थापन** – मूल्याधिष्ठित जीवन जीने के लिए स्वयं में आवश्यक परिवर्तनों का नियोजन करने की क्षमता प्रतिपादित करना। ३. **विश्लेषणात्मक विचार** – स्वयं के मूल्य तथा प्रत्यक्ष व्यवहार का विश्लेषण करके उसमें अंतर दिखाने की क्षमता प्रतिपादित करना।
४.	सामाजिक नेतृत्व	१. **सामाजिक सुधबुध और जिम्मेदारी** – आस–पास होने वाली सामाजिक समस्याएँ और उनके संबंध में समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी बारे में एहसास प्रतिपादित करना। २. **सह वेदना** –सामाजिक पारस्परिक अवलंबन की अनुभूति और उस संबंध में अन्य लोगों के बारे में संवेदना प्रतिपादित करना। ३. **नेतृत्व क्षमता/नेतृत्व गुण** –समाज में कोई छोटा–सा बदलाव लाने के लिए आवश्यक नेतृत्व गुण प्रतिपादित करना। ४. **विश्लेषणात्मक विचार** –सामाजिक समस्याओं पर विश्लेषणात्मक विचार करके उनकी व्याप्ति तथा गंभीरता निर्धारित करने की क्षमता प्रतिपादित करना।

अ.क्र	घटक	क्षमता
	सामाजिक नेतृत्व	५. **समस्या का निराकरण** – सामाजिक समस्याओं का निराकरण करने के लिए सही पर्याय चुनकर समस्या का हल निकालने की दृष्टि से कृति करने की क्षमता का प्रतिपादन करना। ६. **ध्येय निश्चिति** – वैयक्तिक और सामाजिक बदलाव के लिए वास्तववादी तथा विशिष्ट ध्येय सुनिश्चित करने की क्षमता प्रतिपादित करना। ७. **सामूहिक कार्य** – एक साथ समूह में कार्य करने की क्षमता प्रतिपादित करना
५.	**कलारसास्वाद दृश्यकला**	१. **कला के संदर्भ में एहसास** – दृश्य कला के अलग-अलग प्रकार, मूलभूत घटको के बारे में अनुभूति का प्रतिपादन करना। २. **कलाविष्कार निर्मिति** – अलग-अलग दृश्य कलाओं में से किसी एक का प्रयोग करके कोई एक कलाविष्कार निर्माण करने की क्षमता विकसित करना। ३. **अभिव्यक्ति** – दृश्य कला के माध्यम से अपने विचार, भावना तथा अनुभव प्रकट करने की क्षमता प्रतिपादित करना। ४. **सृजनशीलता** – किसी कलाविष्कार में दृश्य कला के मूलभूत घटकों का प्रयोग करके नवनिर्मिति करने की क्षमता का प्रतिपादन करना। ५. **सौंदर्य दृष्टि** – अ) किसी कलाविष्कार में प्रयोग किए गए दृश्य कला के मूलभूत घटक पहचानने की क्षमता प्रतिपादित करना। आ) किसी कलाविष्कार का निरीक्षण करके उसमें अपने मन को छूने वाले घटकों का वर्णन अपने शब्दों में करने की क्षमता प्रतिपादित करना। ६. **प्रत्यक्ष जीवन का उपयोजन** – अ) कला का महत्त्व बताने की क्षमता प्रतिपादित करना। आ) किसी स्थानिक व्यवसायी कलाकार के कार्य के संदर्भ में दैनिक व्यावसायिक पहलू के बारे में समझ प्रतिपादित करना।
६.	**संघर्ष मिटाना**	१. **सृजन विचार** – संघर्ष मिटाने के लिए नवीनतम मार्ग ढूँढ़ने की क्षमता प्रतिपादित करना। २. **विश्लेषणात्मक विचार** – किसी संघर्षजन्य परिस्थिति का वस्तुनिष्ठता से विश्लेषण करके उसे सभी तरह से समझ लेने की क्षमता प्रतिपादन करना। ३. **समस्या निराकरण** – समवयस्क दबाव गुट अथवा दैनिक जीवन की अन्य संघर्षजन्य स्थिति का वस्तुनिष्ठ दृष्टि से विश्लेषण करके उसे सभी दृष्टि से समझ लेने की क्षमता प्रतिपादित करना। ४. **प्रभावी संप्रेषण** – अन्य व्यक्तियों के विचार समझ लेना। अपने विचार स्पष्टता से शब्द बद्‌ध करना तथा अन्यों के साथ प्रभावपूर्ण संप्रेषण करने की क्षमता प्रतिपादित करना। ५. **व्यक्तियों के बीच आंतरिक संबंध** – दोनों पक्षों की भलाई के लिए एक दूसरे के साथ आंतरिक संबंधों को बिना ठेस पहुँचाए शांतिपूर्ण ढंग से संघर्ष मिटाने की क्षमता प्रतिपादित करना।

अ.क्र	घटक	क्षमता
७.	**वृद्‌धि के लिए पूरक मानसिकता**	१. **स्व की अनुभूति** – अपने गुणों, बुद्‌धिमत्ता, कौशल के बारे में मानसिकता पहचानने की क्षमता प्रतिपादित करना। २. **आत्मविश्वास** – वृद्‌धि के लिए अनुकूल मानसिकता से विचार करके अपनी मर्यादाओं पर विजय प्राप्त करने के लिए आवश्यक आत्मविश्वास प्रतिपादित करना। ३. **विश्लेषणात्मक विचार** – वृद्‌धि के लिए पूरक मानसिकता से विचार कर कमियों का विश्लेषण करके उनपर विजय पाने के लिए विभिन्न मार्ग ढूँढ़ने की क्षमता प्रतिपादित करना। ४. **स्वयं व्यवस्थापन** – अपनी कमियों पर विजय पाकर सफल होने की दृष्टि से उचित नियोजन करने की क्षमता प्रतिपादित करना।
८.	**करिअर**	१. **'स्व' की अनुभूति** – अपना भविष्य निर्माण करने की दृष्टि से स्वयं की रुचि, क्षमता तथा उपलब्ध अवसरों के बारे में जानकारी प्रतिपादित करना। २. **विश्लेषणात्मक विचार** – वस्तुनिष्ठ सबूत तथा सही परिस्थिति के आधार पर अपनी रुचि, क्षमता तथा अवसर के बारे में सोचकर उसे शब्दांकित करने की क्षमता प्रतिपादित करना। ३. **निर्णय क्षमता** – रुचि के अनुसार किसी भी एक क्षेत्र को चुनने की तथा उस पर दृढ़ रहने की क्षमता प्रतिपादित करना। ४. **सामूहिक कार्य** – समूह में कार्य करते समय समान रुचि के क्षेत्र के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए गुट में कार्य करने की क्षमता प्रतिपादित करना।
९.	**कला रसास्वाद प्रयोगजीवी कला**	१. **कला के बारे में अनुभूति** – प्रयोगजीवी कला के अलग-अलग प्रकार और मूलभूत घटकों के बारे में संवेदना प्रतिपादन करना। २. **प्रस्तुतीकरण** – प्रयोगजीवी कला के अलग-अलग प्रकारों का प्रयोग करके प्रस्तुतीकरण की क्षमता प्रतिपादित करना। ३. **अभिव्यक्ति** – स्वयं के विचार, भावना तथा अनुभव प्रयोगजीवी कला के माध्यम से व्यक्त करने की क्षमता को प्रतिपादित करना। ४. **सृजनशीलता** – किसी प्रयोगजीवी कला में अपनी सृजनशीलता के बारे में नवनिर्मिति करने की क्षमता को प्रतिपादित करना। ५. **प्रत्यक्ष जीवन का उपयोजन** – प्रयोग जीवी कला के महत्त्व को अनुभव करने की क्षमता को प्रतिपादित करना।

शिक्षकों के लिए

मित्रो,

'स्व-विकास और कलारसास्वाद' यह नया विषय पढ़ाने की अत्यंत महत्त्वपूर्ण एवं चुनौतीपूर्ण लेकिन उतनी ही आनंद देने वाली जिम्मेदारी आपको सौंपी गई है। इसके लिए आप सबका अभिनंदन! समिति को इस विषय का महत्त्व, अनोखापन, उसी प्रकार इससे क्या अपेक्षित है, इसके बारे में स्पष्टता आने के बाद शिक्षण प्रक्रिया का प्रभाव बढ़ेगा तथा विद्यार्थियों के लिए की जाने वाली मेहनत अधिक फलदायी होगी ऐसा हमें पूर्ण विश्वास है।

विषय की आवश्यकता :

१. ९ वीं तथा १० वीं कक्षा के विद्यार्थियों की प्रगति की दृष्टि से यह अत्यंत महत्त्वपूर्ण समय होता है। इसी समय विद्यार्थियों में शारीरिक तथा मानसिक बदलाव तीव्र गति से होते हुए दिखाई देते हैं, इन सभी बदलावों का प्रभाव उनकी पढ़ाई, अध्यापकों, अभिभावकों के साथ होने वाले संबंधों, उनके द्‌वारा लिए जानेवाले निर्णयों पर दिखाई देता है। इन बदलावों का स्वरूप तथा उनको सफलतापूर्ण उपयोग में लाने के मार्ग अगर विद्यार्थी समझ लेते हैं तो उससे होने वाले कुप्रभाव को टाल सकते हैं।

२. इसी कालावधि में विद्‌यार्थी अपने बारे में खुद की पसंद-नापसंद, दोस्त-सहेलियाँ, भविष्य के बारे में सजगता से सोचने लगते हैं। खुद के बारे में होने वाले विचारों को विद्‌यालय के पाठ्‌यक्रम में स्थान मिलने से उनके विचारों को दिशा मिल सकती है और स्वयं की तरफ तटस्थ होकर देखने से अपने गुण-दोष उनकी समझ में आएँगे। इसी हेतु 'स्व-विकास और कलारसास्वाद' विषय का पाठ्‌यक्रम में समावेश किया गया है।

३. परिपूर्ण मानव जीवन जीने के लिए किसी एक कला के साथ जुड़ना, उसके साथ रिश्ता निर्माण करना अत्यंत आवश्यक है। विविध कलाओं के साथ विद्‌यार्थिओं का परिचय अगर प्राथमिक शिक्षा से हुआ है तो भी उनका महत्त्व समझने, सौंदर्यबोध व स्व-विकास की दृष्टि से अंत्यत महत्वपूर्ण है। समृद्‌ध, सुसंस्कृत नागरिक तैयार करने की दृष्टि से कला रसास्वाद, इस अंश का भी इस विषय में अंतर्भाव किया गया है।

इसी प्रकार शालेय जीवन से बाहरी विश्व में प्रवेश करने वाले विद्‌यार्थियों को आत्मविश्वास के साथ जीने के लिए सुसज्ज करने हेतु यह एक सेतु है, इस दृष्टिकोण से इस विषय की तरफ देखा जा सकता है।

अध्ययन-अध्यापन प्रक्रिया :

इस विषय के अध्ययन-अनुभव देने की पद्‌धति तथा उससे निर्माण होने वाले परिणाम अन्य विषयों की तुलना में भिन्न होने के कारण अध्यापन पद्‌धति को ढंग से समझकर उपयोग में लाना अनिवार्य है।

१. इस पाठ्‌यपुस्तक का सभी आशय रचनावादी पद्‌धति से पढ़ाना है, उसके लिए उचित उपक्रम, प्रश्न तथा सूचनाएँ पुस्तक में दी गई हैं। कोई भी पाठ पढ़ाने से पहले उनका संपूर्ण अध्ययन करके उपक्रमों का नियोजन करना है। आवश्यकता पड़ने पर ही विद्‌यार्थियों के सामने पुस्तक का वाचन करें।

२. इस विषय की सफलता, कोई भी 'जानकारी' विद्‌यार्थियों तक पहुँचाने में न होकर अपने बारे में, अन्यों के बारे में सोचने के लिए प्रेरित करना इसपर निर्भर करती है। कक्षा में होने वाली प्रक्रियाएँ, उपक्रम, होने वाला संवाद, गुटकार्य, विद्‌यार्थियों का आत्मपरीक्षण ही विद्‌यार्थियों की सही शिक्षा है। इन प्रक्रियाओं का होना ही इस विषय की सफलता है। सभी उपक्रम सही पद्‌धति से लेकर खुली तथा अर्थपूर्ण चर्चा कराना ही अपना कर्तव्य है। यहाँ आपकी भूमिका सुलभक अथवा सुविधादाता की ही होगी।

३. इस विषय में विद्यार्थियों का अपने बारे में, अपनी समस्याओं के बारे में खुलेपन से बोलना अपेक्षित है। इसके लिए कक्षा का वातावरण विश्वासपूर्ण एवं आनंददायी होना आवश्यक है। उसके लिए हमेशा सजग होना जरूरी है। विद्यार्थियों पर कोई भी दबाव, डर होने से संपूर्ण उपक्रम अर्थहीन हो जाएगा। विद्यार्थियों द्वारा बताई गई समस्यायों के बारे में गंभीरता से सोचना आवश्यक है।

४. पुस्तिका के प्रत्येक उपक्रम को सही न्याय देकर उसके बाद की चर्चा, गुटकार्य अर्थपूर्ण पद्धति से करने का प्रयास करना आवश्यक है। **विषय का मुख्य तत्व उसके उपक्रम, चर्चा, गुटकार्य में ही सन्निहित है यह हमेशा ध्यान में रखना चाहिए।** किसी भी कारणवश विशेष रूप से पाठ्यक्रम को पूरा करने की जल्दबाजी में चर्चा तथा गुटकार्य को टालना नहीं है।

५. अधिकतर सभी उपक्रमों पर खुली चर्चा अपेक्षित है तथा उसमें कोई भी एक गलत अथवा सही उत्तर नहीं है, इसे ध्यान में लें। विद्यार्थी का स्वयं का सोचना, तर्कसंगत उत्तर देना और उनके उत्तर का उनकी पद्धति से समर्थन करना ही अपेक्षित है।

६. विद्यार्थियों को प्रश्नों का अथवा परिस्थिति का सभी दृष्टियों से आकलन होने के लिए दोनों तरफ से प्रश्न पूछकर गहराई से सोचने के लिए उद्यत करना आवश्यक है।

अंक विभाजन (नियोजन)

१. इस विषय के लिए कोई भी लिखित परीक्षा नहीं है, फिर भी शैक्षिक प्रक्रिया में सातत्यपूर्ण मूल्यमापन रखना अपेक्षित है।

२. विद्यार्थी इस विषय के लिए २०० पृष्ठों की कॉपी बनाएँ और जो उपक्रम कॉपी में लिखने आवश्यक हैं उन्हें कॉपी में लिखें। इसके लिए दूसरी किसी भी सामग्री का उपयोग न करें।

३. प्रत्येक प्रकरण के बाद एक मूल्यांकन प्रारूप दिया गया है । उसके अनुसार विद्यार्थियों का निरंतर मूल्यांकन करके उसकी जानकारी अपने पास रखनी आवश्यक है। विद्यार्थियों की कापियाँ जाँचकर पुस्तिका में बताए गए भारांश के अनुसार उन्हें अंकदान करें।

वर्ष के अंत में विद्यार्थियों के प्राप्तांक जोड़ करके श्रेणी तय करें।

अनुक्रमणिका

अनुक्रमांक	प्रकरण का नाम	पृष्ठ
१.	'स्व'– पहचान	१
२.	वृद्धि की आयु	१४
३.	मूल्य	२२
४.	सामाजिक नेतृत्व	३१
५.	कला रसास्वाद– दृश्य कला	४२
६.	संघर्ष मिटाना	५८
७.	वृद्धि के लिए पूरक मानसिकता	७३
८.	कैरिअर	८३
९.	कला रसास्वाद – प्रयोगजीवी कला	९४

एक गाँव में राघव नाम का एक लड़का रहता था। राघव, लोबो, निशा, प्रताप और समिना पाँचों अच्छे दोस्त हैं। ये बड़े नटखट लेकिन स्वभाव के बड़े अच्छे थे। घर के पास ही होने वाली एक छोटी-सी पाठशाला में वह जाते थे। वे सभी नौवीं कक्षा में पढ़ रहे हैं। उस सबको पाठशाला बहुत पसंद थी।
रोज शाम को उन्हें क्रिकट, बैडमिंटन और लुकाछुपी खेलना बहुत पसंद आता था।
कभी कभी घर के पीछे होने वाले आम के पेड़ के नीचे बैठकर घंटो तक गप्पे मारते बैठते थे।
कभी-कभी उनके मन में बड़े होकर क्या बनना है यह सवाल आता था। राघव को कोई प्रसिद्ध व्यक्ति बनने की इच्छा थी। लेकिन उसके लिए निश्चित क्या करना चाहिए यह समझ नहीं रहा था।

लोबो को स्केचिंग करना और प्रतिकृतियाँ तैयार करना अच्छा लगता था। बड़े होने के बाद वास्तु रचनाकार बनने का उसका सपना था।
समिना बड़ी होने के बाद अध्यापिका बने, ऐसी उसके पिताजी की इच्छा थी।
प्रताप बड़े उलझन में है। दिन में तीन बार उसकी महत्त्वाकांक्षाएँ बदलती थीं।
इन सब में निशा सबसे बिनधास्त थी। मैं बड़ी होनेपर क्या बनूँगी यह सवाल उसके मन में बिलकुल नहीं आता था।
एक दिन सभी उनकी हमेशा की जगह इकट्ठा हो गए। वह दिन सबके लिए बुरा सिद्ध हो गया। लोबो को कक्षा की परीक्षा में कम मार्क आ गए थे। राघव ने किसी डरावनी सायकल प्रतियोगिता में हिस्सा लेने के लिए इनकार कर दिया था इसलिए उसे सब डरपोक कह रहे थे। प्रताप अपने माता-पिता के साथ झगड़ा करके आया था।
समीना को उसके माता-पिता ने नया ड्रेस खरिदने से इनकार कर दिया इसलिए वह नाराज थी। निशा को अकेली ट्रेनिंग को जाने के लिए इनकार कर दिया इसलिए वह दुखी थी। सभी कैसे कुछ बुरा चल रहा है इस बारे में बातें कर रहे थे। अपनी परिस्थिति बदलने की ताकत (शक्ति)अगर हम में होती तो कितना अच्छा होता, ऐसा उन्हें लगने लगा।
उतने में उन्होने एक बड़ी आवाज सुनी (झऽऽऽप)
ZAP!
उन्होंने पीछे मुड़कर देखा और जो कुछ देखा वह आश्चर्यचकित करने वाला था।
नमस्कार दोस्तो, हमने आपको डराया तो नहीं? मैंने ऐसा सुना है कि कोई तो शक्तिशाली बनने में इच्छुक है।

अरे वाह!
धैर्यधर और धैर्यशीला!
मेरा मेरी आँखों पर विश्वास ही नहीं हो रहा है! आप सचमुच यहाँ हैं?
अब मैं अपनी पूरी कक्षा को धैर्यधर और धैर्यशीला से प्रत्यक्ष मिलने की बात कहूँगा।
तुम में यह शक्ति (बल) अथवा सामर्थ्य कहाँ से आता है।
असली सामर्थ्य तो खुद को पहचानने से ही आता है। हम कौन हैं यह खुद को पहचानना आना चाहिए।
यह हर एक को खुद ही ढूँढना पडता है।
लेकिन मैं कौन हूँ ?